छत्तीसगढ़ कामधेनु विश्वविद्यालय,
दुर्ग (छ.ग.)

कुलगीत

गोसंरक्षण–गोसंवर्धन का संकल्प पुनीत है।
कामधेनु विश्वविद्यालय की यह अपनी रीत है।।

युगों–युगों से महानदी–शिवनाथ यहाँ की थाती ;
हीरा–सोना उगले धरती, गाएँ कृषक प्रभाती ;
पंचगव्य से स्वास्थ्य–लाभ का अपना भव्य अतीत है ।।
कामधेनु विश्वविद्यालय की यह अपनी रीत है।।

नस्ल–सुधार, नई तकनीकों का जब हो उन्मीलन ;
नई–नई खोजों से निर्धनता का हो उन्मूलन ;
व्यवसायोन्मुख सभी पाठ्यक्रम युगानुरूप गृहीत हैं।
कामधेनु विश्वविद्यालय की यह अपनी रीत है।।

मत्स्य और कुक्कुट–पालन से अर्थ–व्यवस्था सुधरें ;
नारी–शक्ति पुनः जागे तो स्वर्ग धरा पर उतरे ;
बहें दूध की नदियाँ, श्रम ही जीवन का नवनीत है।।
कामधेनु विश्वविद्यालय की यह अपनी रीत है।।

जैव विविधता युक्त प्रांत में वन्य जीव संरक्षित ;
पशुओं की हो उचित चिकित्सा यह सर्वथा सुनिश्चित
हर पशु, हर पक्षी सचमुच जीवन का सच्चा मीत
कामधेनु विश्वविद्यालय की यह अपनी रीत है।।